Metaphysics

TDC PART-I

PAPER-II

Dr. Vijaya Kumar
Deptt. of Philosophy
L. S. College, Muzaffarpur

fppt.com

तत्त्वमीमांसा

अनेकेश्वरवाद

Polytheism

fppt.com

- अनेकेश्वरवाद वह सिद्धान्त है जो एक नहीं बल्कि अनेक ईश्वर में विश्वास करता है। इन अनेकों ईश्वर को आम तौर पर देवी–देवताओं की संज्ञा से विभूषित किया गया है। ये पुरुष और नारी दोनों ही रूपों में माने जाते हैं। अनेकेश्वरवाद प्रधानत: धर्म के कुछ कम विकसित या प्रारम्भिक स्तर का विश्वास है। जब लोगों का मानसिक विकास उतना नहीं हुआ था और प्राकृतिक तथ्यों की व्याख्या के लिए प्राय: अलौकिक सत्ताओं का सहारा लिया जाता था उसी वक्त प्रकृति के अनेकों तथ्यों एवं घटनाओं से सम्बन्धित अनेकों देवी–देवताओं की कल्पना की गई जिनका इन तथ्यों या घटनाओं पर नियंत्रण था।

fppt.com

- इस रूप में विश्व में अनेकों देवी–देवता हैं, जैसे वर्षा के अलग देवता है, नदी–पहाड़ों के अलग देवता है, घन के अलग देवी या देवता है, विद्या के लिए अलग देवी या देवता हैं शक्ति के लिए अलग देवी या देवता हैं। इस प्रकार अलग–अलग विभागों के लिए अलग–अलग देवी–देवता की कल्पना की जाती है। इन देवी–देवताओं को प्रायः मनुष्य रूप में ही समझा जाता है। इसीलिए इनकी कल्पना नर–नारी के रूप में की जाती है।

fppt.com

- भारतवर्ष में वैदिक काल अनेकेश्वरवाद का ही काल है। इन्द्र, वरुण, अग्नि, मरुत, सूर्य, चन्द्र आदि अर्नकों देवी–देवताओं को इस युग में माना जाता था। परन्तु अनेकेश्वरवाद की विषय में यह भी कहा जाता है कि अनेकों देवी–देवताओं को मानते हुए भी वैदिक काल से ही यह आस्था चली आ रही है कि मूल में एक ही ईश्वर है और ये देवी–देवता उसी के विभिन्न रूप हैं– एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।

fppt.com

THANK YOU

fppt.com